बयानवीर कृष्णपाल का मंझावली पुल का झांसा

फ़रीदाबाद (म.मो.) स्थानीय सांसद एवं केन्द्रीय मंत्री कृष्णपाल गूजर व इनकी सरकार के पास करने धरने को तो कुछ है नहीं सिवाय लफ़्फ़ाजी करने के। इसलिये आये दिन सुबह-शाम यहां वहां कभी मैट्रो रेल चलाते हैं तो कभी पुल का शिलान्यास तो कभी किसी गली में नारियल फ़ोड़ते हैं।

दिनांक 17 फ़रवरी को गूजर साहब ने एक 'बड़ा काम' यह गिनवाया कि मंझावली वाले यमुना पुल के लिये 55 एकड़ भूमि अधिग्रहण के लिये एक कमेटी गठित कर दी गयी है। इसके अध्यक्ष ज़िला उपायुक्त होंगे। इसके अलावा पुल तक पहुंचने वाली सड़कों को चौड़ा करने के लिये हरियाणा पी डब्लू डी को आवश्यक 38 एकड़ भूमि अधिग्रहित करके देने के लिये भी इसी कमेटी को अधिसूचित कर दिया गया है। लेकिन गूजर जी ने यह नहीं बताया कि अधिग्रहण की यह कार्यवाही कितने सप्ताह में या कितने माह में या कितने वर्षों में पूरी हो पायेगी?

विदित है कि केन्द्रीय सड़क परिवहन मन्त्री नितिन गडकरी व गूजर ने 15 अगस्त 2014 को इस पुल का शिलान्यास बड़ी धूमधाम व पूरी ड्रामेबाज़ी के साथ किया था। वहां लाखों की भीड़ जुटा कर मोदी को अपनी लोकप्रियता दिखाने के लिये गुजर ने उन तमाम लोग़ों के जिम्मे भीड़ ढो कर लाना लगा दिया जो उन दिनों होने वाले विधान सभा चुनावों में भाजपा टिकट चाहते थे। लिहाज़ा प्रत्येक टिकट तलबगार ने लाखों-लाखों खर्च करके भीड़ तो जुटा दी परन्तु चुनावों के परिणाम ने गूजर की पोल खोल दी जब जिले (पलवल समेत) की 9 में से मात्र 3 सीट ही भाजपा को मिल पाई थी; जबकि संसदीय चुनाव में गूजर इन सभी सीटों से भारी बहुमत लेकर निकले थे।

गूजर व गडकरी ने उस वक्त कहा था कि 300 करोड़ की लागत से बनने वाला यह पुल 2 साल में बन कर चालू हो जायेगा। यह बात उन्हें इस लिये कहनी पड़ी थी कि 20-25 वर्ष पहले भी राजेश पायलट ने इस पुल का शिलान्यास किया था। सवाल उठता है कि जब ज़मीन अधिकृत हुई नहीं, डीपीआर (डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट) बनी नहीं, निर्माण कार्य का ठेका किसी को दिया नहीं तो शिलान्यास करने की क्या जल्दी थी? जल्दी बस यही थी कि उस वक्त होने वाले विधानसभा चुनावों में जनता के वोट बटोरने के लिये उन्हें भ्रमित किया जाय और जनता भ्रमित हुई नहीं, क्योंकि यह जनता सबकुछ जानती है, अन्दर क्या है बाहर क्या है, सब जानती है।

इन दोनों मन्त्रियों ने यह भी नहीं बताया कि पुल की लागत का पैसा कौन से खाते से आयेगा। उनकी भाषणबाज़ी से तो लग रहा था कि जैसे यह सारा पैसा केन्द्र सरकार लगायेगी। परन्तु ऐसा कभी हुआ नहीं और न ही होने की संभावना । यह सारा पैसा कोई ठेकेदार कम्पनी लगायेगी और वह बजरिया टोल टैक्स उम्र भर जनता से वसूली करती रहेगी। सरकार एवं इन मन्त्रियों का तो बस इतना तय करना काम है कि लूट का ठेका किस को देना है? जाहिर है यह ठेका उसी को दिया जायेगा जो बदले में इनको भी अच्छा खासा 'चन्दा' कमीशन या हिस्सा पत्ती दे। गत 2 वर्षों से यही तलाश हो रही है।

इस बात में कोई संदेह नहीं कि इस पुल के बन जाने से फ़रीदाबाद सीधे नौयडा से जुड़ जायेगा। दिल्ली होकर नौयडा जाना बहुत लम्बा पड़ता था। इसके बन जाने से यह रास्ता आधे से भी कम हो जाता। जब से भारी वाहनों के लिये वाया दिल्ली का रास्ता बन्द हुआ है, उन्हें पलवल-अलीगढ होकर जाना पड़ता है, जो कि अतिरिक्त लम्बा होने के अलावा बहुत ही ऊबड़-खाबर है। इस से तेल का खर्चा तो बढता ही है प्रदूषण भी साथ में बढता है। हर लिहाज़ से महत्वपूर्ण होने के बावजूद इन बयानवीरों से यह पुल नहीं बन पा रहा है। लगता है 2019 के चुनावों के आसपास फ़िर से इस पुल को लेकर कोई बड़ी ड्रामेबाज़ी करके जनता को फ़िर से भ्रमित करने का प्रयास किया जायेगा।

नगर निगम चुनाव के रंग निराले

फ़रीदाबाद (म.मो.) नगर निगम चुनावों की चर्चा शुरू होते ही शहर में छुटभैये नेता जनता के हितैषी बन फ़िर नज़र आने लगे हैं। जिसके चलते शहर को इन छुटभैये नेताओं ने अपने होर्डिंग बैनर लगाकर पाट दिया है। जबकि असलियत में इनमें से एक का भी समाज सेवा व क्षेत्रवासियों से कोई लेना-देना नहीं है। बल्कि ये सब चुनाव जीतकर पूरे 5 साल तक लूट कमाई का पट्टा अपने नाम हासिल करना चाहते हैं। इस लूट कमाई में सबसे बड़ी लूट पार्षदों की अवैध निर्माणों को बनवा कर होती है। जिसके चलते शहर में छुटभैये नेताओं की बाढ सी आई हुई है व पार्षद बनने की होड़ लगी हुई हैं।

इसी कड़ी में वार्ड नं. 14 से एन एच 5 पी ब्लॉक में रहने वाली संदीप कौर (रीटा सिंह) का सिर भी झूम गया व उन्होंने भी अपनी कार पर बी.जे.पी का झंडा ठोक कर चुनावी मैदान में उतरने का मन बना लिया है। समाज बिरादरी में अपना दबदबा दिखाने के खातिर मुख्यमंत्री खट्टर, कृष्णपाल गुर्जर व सीमा त्रिखा के साथ अपने चित्रों वाले होर्डिंग शहर में लगवा दिए हैं।

बड़खल विधानसभा क्षेत्र से सीमा त्रिखा चुनाव जीती तो संदीप कौर अपनी खुद की पीठ थपथपाते हुए ये कहने लगी कि उन्होंने चुनाव में सीमा त्रिखा को 15 हज़ार वोट दिलाई है। मगर कहां से दिलाई, ये पता नहीं। इसी गलत फ़हमी के चलते अपने आप को बी.जे.पी का वरिष्ठ नेता समझते हुए संदीप कौर ने वार्ड 14 से पार्षद का चुनाव लड़ने की ठान ली। संदीप कौर की राजनीति, सामाजिक या धार्मिक किसी भी संगठन से कोई लेना देना नहीं रहा है। जबकि संदीप कौर को ढंग से अपने मोहल्ले के लोग भी नहीं जानते। वहीं वार्ड नं. 14 के चारू गोसांई पार्षद है इसी वार्ड से चारू के पति नरेश लगातार पार्षद रहे हैं। ये बात स्पष्ट है कि चारू और नरेश को पार्षद बनाने के लिये पूर्व मंत्री ए.सी. चौधरी ने एड़ी-चोटी का जोर लगा व घर-घर जाकर वार्डवासियों से अपनी झोली फ़ैला कर वोट इकट्ठा किये।

गोसाई परिवार ने भी ऐ सी चौधरी की पूरी चापलूसी करी व चौधरी का टट्टू बन नरेश ने सारे शहर में हुए चौथे उठालो में चौधरी का अंगरक्षक बन साथ रहा व किसी-किसी जगह चौधरी के चक्कर में लोगों की झाड़-फ़टकार भी सुननी पड़ी। जानकार बताते हैं सत्ता से बाहर रहते चौधरी का अपना बेटा विनय भी जब चौधरी को छोड़कर सैक्टर में बस गया उस दौरान नरेश चौधरी का हनुमान बन उसके लिये संजीवनी बुटी इकट्ठी करता रहा।

यहां पाठको को यह बता दें कि ये घी-खिचड़ी की जोड़ी भी निगम चुनावों की बलि चढ गई जिसका करण ये माना जा रहा है कि ए सी चौधरी इस बार नरेश गोसाई की जगह अपने बेटे विनय को चुनाव लड़वाना चाहते हैं। यहां पाठको को यह भी बता दें कि विनय का कोई अपना राजनीतिक ग्राउंड नहीं है, सिवाय इसके कि वह चले हुए कारतूस ए सी चौधरी का बेटा है। वहीं ऐ सी चौधरी ने अपना पैंतरा चलते हुए अपने ही ब्लॉक के कुछ एक चापलूसों से आर डब्लू ए का गठन करवा दिया जो लोग सभी चौधरी के कहने पर नरेश के बूथ संभालते थे व दिनांक 21/2/16 को फ्रेंडस सोशल वर्कर के कार्यालय में एक मिटिंग रखवा दी इस मिटिंग से पहले चौधरी द्वारा पूरे वार्ड में मुनादी करवाने के बाद भी मुश्किल से 40-50 लोग इकट्ठा कर पाया। ठीक मिटिंग के बाद चौधरी के घर आर डब्लू ए के चापलूसों के साथ चौधरी ने योजना बनाई कि उसी शाम 21/2/16 को एम ब्लॉक दुर्गा मंदिर में आर डब्लू ए विनय को समर्थन देगी जिसको लेकर उसी दिन शाम को मंदिर में मिटिंग तो हुई लेकिन आर डब्लू ए जैसे ही विनय को समर्थन की बात कही जिस पर ब्लॉक वासियों ने आर डब्लू ए का विरोध कर डाला। देखते ही देखते मिटिंग में मौजूद चौधरी के टट्टूओं व ब्लॉक वासियों के बीच गाली-गलौच व हाथा-पाई की नौबत आ गई। ब्लॉक के बुजुर्गों के हस्तक्षेप के बाद मामला शांत हुआ व मिटिंग में ए सी चौधरी व आर डब्लू ए के 20-25 लोग रह गए जो देर रात चौधरी के घर पहुंच मिठाई के डिब्बे व पूँलों के गुलदस्ते देकर अपने-अपने घर लौट गए जो चौधरी ने अपने बेटे विनय के स्वागत के लिए आर डब्लू ए के चापलूसों को भिजवाए थे। अपनी .फजीहत होती देख चौधरी वार्ड के एक-एक व्यक्ति को अपने घर बुला, मनाने में लगे हुए हैं व ब्लॉक में अपनी झूठी किस्से कहानिया से हंसी के पात्र बन गए।

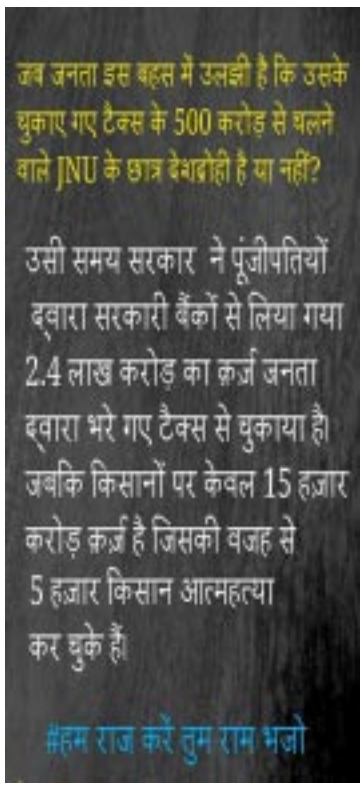

भ्रष्टाचार की भेंट चढता अरावली वन क्षेत्र

फ़रीदाबाद (म.मो.) दिल्ली-फ़रीदाबाद-गुड़गांव के बीच फ़ैली अरावली पहाड़ियों का आरक्षित वन क्षेत्र लगातार भ्रष्टाचार की भेंट चढता जा रहा है। यहां खनन तथा वृक्ष-कटाई पूर्णतया प्रतिबंधित होने के बावजूद दोनों काम लगातार हो रहे हैं। इन अवैध कामों को रोकने की जिम्मेदारी वन विभाग, खनन विभाग तथा पुलिस को मुख्यतौर पर सौंपी गयी है। परन्तु ये तीनों विभाग अपनी इस ज़िम्मेदारी को बेच कर खाने में जुटे रहते हैं। फ़लस्वरूप शायद ही कोई दिन जाता होगा जिस दिन वन के पेड़ न कटते हों, ज़मीन समतल करने को पत्थर न निकाले जाते हों। इसके चलते गत दस वर्षों में यहां 100 से अधिक फ़ार्म हाउस एवं विवाह स्थल बन चुके हैं। यह सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा।

जंगल एवं पेड़ों की रखवाली के लिये वन विभाग (फ़रीदाबाद) ने फ़िलहाल 3 गार्ड नियुक्त कर रखे हैं। इनकी शिकायत पर पुलिस में मुकदमा दर्ज कराने के अलावा वन विभाग के अधिकारी स्वयं भी चालान व जुर्माना करने के साथ-साथ वन एवं पर्यावरण अदालत में मुकदमा चला सकते हैं। इन मामलों में कड़ी सज़ा का प्रावधान होने के बावजूद पेड़ों का कटना नहीं थम रहा। हो यह रहा है कि जिसको जितनी अधिक शक्तियां प्राप्त हो जाती हैं, वह उसके दुरूपयोग से उतनी अधिक लूट-मारी करने लगता है। वन विभाग के गार्ड को यदि आंखें मीचे रखने के एवज में मोटी कमाई होती है तो उसे क्या पड़ी जो वह काग़ज़ काले करके चालान करता फ़िरे और इलाके के लोग़ों से दुश्मनी मोल ले। पिछले दिनों वन विभाग के उच्चाधिकारियों का बयान कुछ अखबारों में प्रकाशित हुआ था। इसमें कहा गया था कि 3 गार्ड कम हैं, और इनकी संख्या बढा कर 10 की जायेगी, इन्हें हथियार, दूरबीन व वाहन आदि उपलब्ध कराये जायेंगे ताकि वे बेहतर ढंग से जंगलों की रखवाली कर सकें। जंगलों की रखवाली हो जाये इससे बढिया तो कोई बात नहीं परन्तु उक्त उपायों से रखवाली होती लग नहीं रही। गार्डों की संख्या बढने से पेड़ ज़्यादा कटेंगे क्योंकि अभी तो लूट-कमाई करने वाले मात्र 3 गार्ड ही हैं, जब ये 10 हो जायेंगे तो अपनी-अपनी लूट-कमाई का स्तर बनाये रखने के लिये पेड़ों की कटाई का बढना स्वाभाविक ही होगा। यदि जंगलों को बचाया जा सकता है तो केवल सरकार की अपनी इच्छाशक्ति से। भ्रष्टाचारियों एवं कानूनों का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध कड़े कदम उठाने से।

गत पखवाड़े पाली क्षेत्र में रातों-रात सैंकड़ों पेड़ काट कर उनके ठूंठों को जलाने के पश्चात् वहीं एक 'प्राचीन' मन्दिर की स्थापना कर दी गयी। मन्दिर के नाम पर घेरी गयी कई एकड़ ज़मीन धीरे-धीरे अन्य रिहायशी तथा व्यवसायिक कामों में ले ली जायेगी। अनखीर चौक से सूरजकुंड तक सड़क के दोनों ओर जंगल के भीतर तक पूरी गति के साथ पेड़ कटाई का काम खुले आम चल रहा है। अनंगपुर चौक के पास तो फ़्लैट बनाने के लिये कई एकड़ में खड़े सैंकड़ों पेड़ देखते ही देखते साफ़ कर दिये गये। कार्यवाही के नाम पर बस चंद काग़ज़ काले किये जायेंगे, फ़िर ले-देकर मामला निपटा दिया जायेगा। दरअसल इस तरह का अवैध धंधा कोई साधारण आदमी नहीं बल्कि बड़े नेता, बड़े अफ़सर तथा बड़े व्यापारी करते व करवाते हैं।

सरकार की नीयत यदि साफ़ है और वह इस वन क्षेत्र को वास्तव में ही संरक्षित रखना चाहती है तो इस सारे क्षेत्र को निजी अधिकारों से मुक्त कराकर इसे सार्वजनिक सम्पत्ति घोषित करके अपने स्वामित्व में ले ले। वैसे भी यह सारा पहाड़ ग़ैर मुमकिन देह शामलात है। लेकिन नेताओं के निहित स्वार्थों के चलते इस क्षेत्र में चकबंदियां व खरीद-फ़रोख्त का धंधा बरसों से चला आ रहा है।

वैश्वीकरण के दौर का विकृत-बिलम्बित राष्ट्रवाद....

राष्ट्रवाद का जन्म सामन्तवाद के पतन और पूँजीवाद के उत्थान के दौर में राष्ट्रराज्य की माँग के साथ हुआ था.... इसके मूल में राष्ट्रिय बाजार था जहाँ किसी एक भौगोलिक क्षेत्र में एक भाषा बोलनेवाले, एक सामान संस्कृति को जीने वाले लोग रहते हों. उस खास इलाके को उसी राष्ट्र के पूँजीपति लूटने-खाने पर अपना वर्चश्व चाहते थे, जैसे- अंग्रेज, फ्रांसीसी, इटालियन इत्यादि. भारत में इस प्रक्रिया को अंग्रेज उपनिवेशवादियों ने गुलाम बना कर विकृत कर दिया.... इतिहास की यह स्वाभाविक यात्रा हमारे यहाँ अधूरी ही रह गयी....

क्लासकीय मानदण्ड पर सामंतवाद से लडते हुए नहीं, बल्कि उपनिवेशवाद के खिलाफ एकजुटता और संघर्ष के दौरान एक बहुराष्ट्र देश में भारतीय राष्ट्र का उद्भव हुआ.

आजादी के बाद भाषाई आधार पर राज्यों के गठन के लिए खुनी संघर्ष हुए.... आज भी राष्ट्रीयताओं की मुक्ति के नाम पर यह लड़ाई किसी न किसी रूप में जारी है....

यह विकृत इतिहासधारा की अपूर्ण परिघटना का दुष्परिणाम है...

इसी बीच पूरी दुनिया के राष्ट्रवाद के अलंबरदारों ने वैश्वीकरण करने और राष्ट्रवाद को तिलांजलि देने का सामूहिक निर्णय लिया.. यूरोप के एकीकरण से इसे समझा जा सकता है, जहाँ किसी दौर में भाषाई-भौगोलिक इलाके के बटवारे के लिए खुनी संघर्ष चला था, अब सब मिलकर लूटने-खाने पर सहमत हो गए...

यानी राष्ट्र वाद मंडी में पैदा हुआ था और विश्व मंडी में तिरोहित हो गया....

अब भारत के कथित राष्ट्रवादी विदेशी बाजार से अपना नाभिनाल जोड़े हुए हैं.... डौलर महाप्रभु की आरती करते हैं.

आज के दौर का राष्ट्रवाद उस बच्चे की तरह है जो नौ महीने में पैदा नहीं हो पाया. ग्यारहवे-बारहवें महीने तक वह पकठोस हो गया.... ऐसे प्रसव से जन्मे बच्चे को अक्सर लोग राकस कह देते हैं....

गजब नहीं कि हमारे राष्ट्रवादी दुनियाभर के पूंजीपतियों के साथ सांठ-गाँठ करते फिरते हैं और अंग्रेजों भारत छोडो की जगह नारा लगाते हैं कि अंग्रेजों भारत आओ मेक इन इण्डिया करो, लूट मचाओ और बदले में हमारा हिस्सा रख जाओ....

- दिगम्बर